पृष्ठ संख्या

नाम — डॉ. मोती लाल शाकार

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पद नाम - सहायक प्राध्यापक

विषय - 'भाषाविज्ञान'

शीर्षक - 'स्वरों का वर्गीकरण'

स्वरों का वर्गीकरण

डॉ. मोतीलाल शाकार
सहायक प्राध्यापक
दुर्ग महाविद्यालय, रायपुर

स्वर —

परिभाषा — "स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख-विवर से निकल जाती है।

स्वरों के वर्गीकरण के आधार —

स्वर ध्वनियाँ एक प्रकार की गूँज होती है। मौखिक स्वरों में यह गूँज मुख-विवर में होती है तथा अनुनासिक स्वरों में गूँज मुख-विवर तथा नासिका विवर दोनों में होती है। मुख-विवर में गूँज मुख-विवर के स्वरूप पर निर्भर करती है। वह चौड़ा होगा तो एक प्रकार की गूँज होगी तथा सँकरा होगा तो दूसरे प्रकार की। इसका आशय यह है कि किसी भाषा में जितने स्वर होते हैं, उनके उच्चारण में उतने ही प्रकार के स्वरूप मुख-विवर को देने पड़ते हैं। यह स्वरूप नीचे का जबड़ा, जीभ, कौवा, ओष्ठों की स्थिति पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त स्वर की मात्रा इस बात पर निर्भर करती है कि गूँज कब तक हो रही है। इन दृष्टियों से स्वरों का वर्गीकरण निम्नांकित आधारों पर किया जा सकता है —

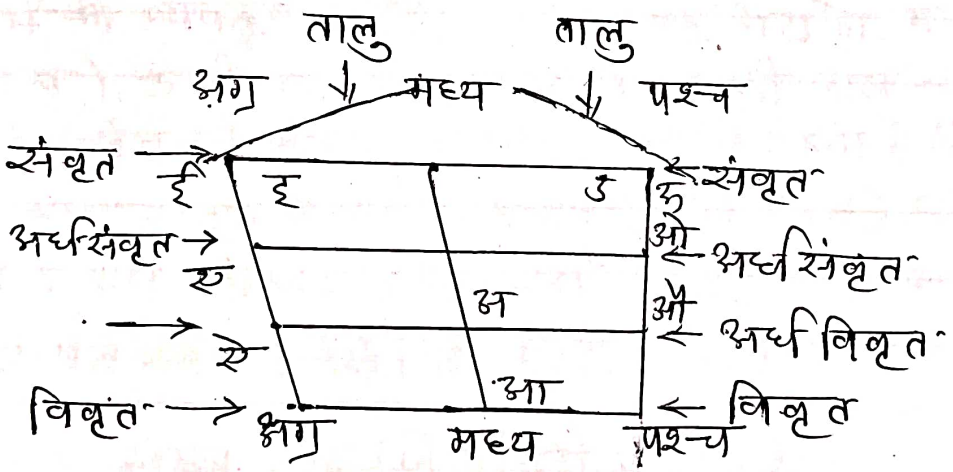

संवृत = बिलकुल सँकरा

अर्धसंवृत = कुछ सँकरा

अर्धविवृत = कुछ खुला

विवृत = बिलकुल खुला

अग्र, मध्य, पश्च जीभ के भाग का द्योतन करते हैं।

1. जीभ का भाग —

किसी स्वर के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग महत्त्वपूर्ण कार्य करता है, तो किसी में मध्य और किसी में पश्च इस आधार पर स्वर के तीन प्रकार के होते है —

अग्र स्वर —

जैसे हिंदी में- ई, इ, ए, ऐ

मध्य स्वर —

जैसे हिंदी में अ, आ

पश्च स्वर —

जैसे हिंदी में ऊ, उ, ओ, औ, ऑ

2. जीभ के व्यवहृत भाग की स्थिति —

जीभ का व्यवहृत भाग (चाहे वह अग्र हो, मध्य हो या पश्च) कभी तो ऊपर तालु के काफी पास चला जाता है (संवृत), कभी बिलकुल नीचे रहता है (विवृत) और कभी संवृत के पास रहता है (अर्धसंवृत), और कभी विवृत के पास (अर्धविवृत)। इस प्रकार चार भेद हुए —

संवृत स्वर (जैसे हिंदी ई, इ, उ, ऊ),

अर्धसंवृत स्वर (जैसे हिंदी ए, ओ)

अर्धविवृत स्वर (जैसे हिंदी ऐ, अ, औ, ऑ) तथा

विवृत स्वर (जैसे हिंदी आ)

3. ओष्ठों की स्थिति —

ओष्ठों को वृत्ताकार करके जिन स्वरों का उच्चारण होता है; उन्हें वृत्तमुखी स्वर (जैसे हिंदी ऊ, उ, औ, ओ, ऑ) तथा जिनमें बिना ऐसा किए उच्चारण होता है, उन्हें

आवृत्तमुखी स्वर (जैसे हिंदी अ, आ, इ, ई, ए, ऐ) कहते हैं। ये दो मुख्य भेद हैं। यों गौणत: पूर्णवृत्तमुखी (अ), अल्पवृत्तमुखी (ऑ), उदासीन (अ) तथा पूर्णविस्तृत (ए) आदि अन्य भी भेदोपभेद किए जा सकते हैं।

4. <u>मात्रा</u> —

मात्रा का अर्थ स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय की मात्रा है। इस आधार पर मुख्यत: दो भेद होते हैं — ह्रस्व स्वर (जैसे हिंदी अ, इ, उ) तथा दीर्घ स्वर (हिंदी — आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)। गौणत: दो भेद और होते हैं — ह्रस्वार्ध स्वर जो ह्रस्व स्वर से भी कम समय में उच्चरित हों; जैसे कुछ लोगों के उच्चारण में ब्रह्म, सभ्य, विश्व आदि में अंत में सुनाई पड़ने वाला अ, अथवा स्टेशन, स्कूल, स्त्री आदि के बहुत से लोगों के उच्चारण में प्रारंभ में सुनाई पड़ने वाली बहुत हलकी सी इ। प्लुत स्वर - जो दीर्घ से भी कुछ दीर्घ हो। 'ओउम' में 'ओ' ऐसा ही स्वर है जिसके बाद का ३ प्लुत का ही द्योतक है।

5. <u>कौवे की स्थिति</u> —

इस आधार पर स्वरों के दो भेद होते हैं —

मौखिक स्वर — जिसके उच्चारण में कौवा ऊपर उठकर नासिका-विवर को बंद कर लेता है और सारी की सारी हवा मुँह से ही निकलती है। हिंदी के अ, आ, इ, ई आदि ऐसे ही स्वर हैं।

अनुनासिक स्वर — जिसके उच्चारण में कौवा बीच में लटकता रहता है, अत: हवा का कुछ अंश नाक से भी निकलता है हिंदी के आँ, अं, इँ, उँ, ऊँ, एं आदि ऐसे ही स्वर हैं। अनुनासिक स्वर दो प्रकार के हो सकते हैं —

पूर्ण अनुनासिक स्वर — जैसे - 'हाँ का आँ'।
अल्प अनुनासिक स्वर - जैसे 'राम' का 'आ'।

6. <u>जीभ के अचल या चल होने के आधार पर</u> —

इस आधार पर स्वर के दो प्रकार होते हैं —

(क) मूल स्वर - जिसके उच्चारण में जीभ अचल रहती है अर्थात् किसी एक स्थिति में रहती है। हिंदी के मानक रूप में सामान्यतः सभी स्वर ऐसे ही हैं।

(ख) संयुक्त स्वर — ऐसे स्वरों के उच्चारण में जीभ एक स्वर स्थिति से चलकर दूसरी स्वर स्थिति में जाती है। हिंदी में 'वैयाकरण' में 'ऐ' के उच्चारण में जीभ 'अ' की स्थिति से 'इ' की स्थिति की ओर जाती है। इसी प्रकार 'कौवा' के 'औ' में 'अ' से 'उ' की ओर जाती है।

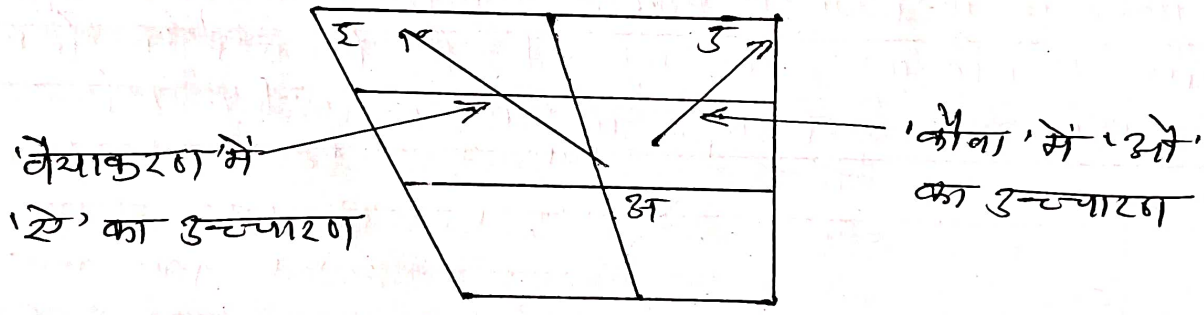

7. <u>मुँह की मांसपेशियों की शिथिलता - दृढ़ता</u> —

इस आधार पर स्वरों के दो भेद होते हैं —

(क) शिथिल - जैसे अ, इ, उ ह्रस्व स्वर।

(ख) दृढ़ — जैसे इ, ऊ आदि दीर्घ स्वर।

सभी स्वर समान रूप से शिथिल या दृढ़ नहीं होते, इसलिए और गहराई में जाकर इनके 'पूर्ण' तथा 'अल्प' आदि कई उपभेद भी किए जा सकते हैं। कुछ लोग केवल संवृत स्वरों का ही इस दृष्टि से वर्गीकृत करते हैं।

8. स्वर तंत्रियों की स्थिति –

स्वर तंत्रियों की स्थिति के आधार पर स्वरों के दो भेद होते हैं –

(क) घोष स्वर – प्रायः सभी भाषाओं में सभी स्वर घोष स्वर होते हैं, अर्थात् उनके उच्चारण में स्वर-तंत्रियाँ एक-दूसरे के बहुत निकट होती है।

(ख) अघोष स्वर –

अपवाद स्वरूप कुछ भाषाओं में कुछ विशेष स्थितियों में अघोष स्वर उच्चरित होते हैं जिनके उच्चारण के समय स्वर-तंत्रियाँ एक-दूसरे इतनी निकट नहीं होती कि उनके बीच से निकलने वाली हवा स्वर-तंत्रियों से किनारों से टकराकर घर्षण करती हुई निकले। ऐसे स्वर को फुसफुसाहट स्वर या जणित स्वर भी कहते हैं। अवधी में 'जाति' 'होयु' के 'इ', 'उ' ऐसे ही स्वर है। अघोष स्वरों को प्रायः नीचे छोटा वृत्त का चिह्न लगाकर लिखते हैं।

इसी प्रसंग में मर्मर स्वर का भी उल्लेख किया जा सकता है। इसे अधिकांश विद्वानों ने घोष और जणित के बीच की स्थिति माना है, इसीलिए इसे अर्धघोष (Half-voiced) कहते हैं। इसके साथ-एक रगड़ जैसी आवाज सुनाई पड़ती है इसमें हवा का दबाव घोष और जणित दोनों प्रकार के स्वरों से कुछ कम होता है। बीमार या कमजोर आदमी द्वारा बोले गए अधिकांश स्वर इसी प्रकार के हो जाते हैं। हिंदी में 'यह', 'वह' आदि शब्दों में जब 'ह' प्रायः अनुच्चरित सा होता है, पूर्ववर्ती स्वर 'अ' मर्मर स्वर हो जाता है। भाषा के विकास में 'मर्मर स्वर' धीरे-धीरे लुप्त हो जाते हैं। मर्मरता की कमी-बेशी के आधार पर कई प्रकार के मर्मर स्वर हो सकते हैं।